महादेवी वर्मा के काव्य में बिम्ब विधान

*डॉ. सुशील कुमार ब्यौहार

रचनाकारों ने रचना कर्म के तीन सोपान माने हैं – अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण। पहले रचनाकार विषय–वस्तु की अनुभूति करता है जिसे वह भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और उसकी अभिव्यक्ति पाठकया श्रोता के मन तक संप्रेशित होती है। साहित्य को सौन्दर्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए बिम्ब, वक्रोति, अंलकार, प्रतीक एवं कल्पनाओं का आश्रय लिया जाता है। प्राचीन काव्य सिद्धांत में बिम्ब विधान विश्लेषणात्मक रूप–विधान की श्रेणी में आता है। पाष्चात्य विद्वान सी.डी. लेविस ने बिम्ब के बारे में कहा है – "A poetic image is a word picture charged with emotion or passion"[1] अर्थात् काव्यात्मक बिम्ब एक ऐसा शब्द चित्र है जो कि भाव या संवेग से अनुप्राणित होता है । बिम्ब कला का मूल तत्व है, जिसका आधार कल्पना है, बिम्ब को हम छाया, प्रतिच्छाया अथवा अनुभूति कह सकते हैं। बिम्ब में सृजनात्मक शक्ति, भाव–प्रवणता तथा तथ्यों के एकीकरण का गुण रहता है। बिम्ब जितना मौलिक होता है उतना ही भावों को वहन करने की तीव्र शक्ति भी।

आई.ए. रिचर्ड्स के अनुसार – " बिम्ब पहले से ज्ञात किसी संवेदन के अवषिष्ट के रूप में व्यक्त संवेदन के प्रत्यांकन के द्वारा कार्य करता है।"[2] डॉ. नगेन्द्र का मत है – "काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानव छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।"[3] बिम्ब विधान के विषय में पंत की अभिव्यक्ति–"कविता के लिए चित्र भाषा की आवष्यकता पड़ती है उसके शब्द सुस्वर होने चाहिए जो बोलते हों....जो अपने भावों को अपनी ही ध्वनि में आंखों के आगे चित्रित कर सके, जो अलंकार में चित्र, चित्र में अलंकार हो।"[4] अर्थात् किसी विषय का ऐसा निरूपण कि जिससे उसका चित्र प्रस्तुत हो जाए। ऐन्द्रियता बिम्ब का अनिवार्य गुण है । इंद्रियां ही पदार्थ या वस्तु की संवेदना आत्मा या मन तक पहुंचाती है। ऐन्द्रियता के आधार पर बिम्ब के भेद इस प्रकार किये जा सकते हैं–रूप बिम्ब, ध्वनि बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, स्वाद बिम्ब, गंध बिम्ब आदि। काव्यात्मक बिम्ब की 'साहित्य विज्ञान' में पांच विषेषताएं हैं –

1. बिम्ब मूलतः वस्तु का चित्र है, 2. बिम्ब का माध्यम शब्द होता है, रेखाएं नहीं, 3. बिम्ब का गुण ऐन्द्रियकता है 4. बिम्ब का लक्ष्य चित्रित वस्तु के द्वारा भाव उत्पन्न करना है एवं 5. बिम्ब में बाह्य वस्तु का आरोपण नहीं होता है। महादेवी वर्मा के काव्य में उपर्युक्त विषेषताओं का समावेष है। उनके काव्य में ध्वनि बिम्ब, रूप बिम्ब, स्पर्ष बिम्ब आदि–आदि है, जो भाव संवेदनाओं को चित्र के रूप में उकेरते हैं। रूप बिम्ब–महादेवी वर्मा के काव्य में रूप बिम्ब का चित्र हमें कई स्थानों में देखने को मिलता है। महादेवी वर्मा के मन के भाव "नींद में सपना बन अज्ञात/गुदगुदा जाते हो जब प्राण/ ज्ञात होता हंसने का मर्म/तभी तो पाती हूं यह जान।"[5] भारतीय धर्म, दर्षन में परमात्मा के अस्तित्व के संबंध में सबसे बड़ा तर्क है–जब सृष्टि है, तो उसका सृष्टा भी है। कवयित्री ने बिम्ब में इस प्रकार उकेरा है –"तुम्ही में सृष्टि, तुम्ही में नाष"

ध्वनि बिम्ब–महादेवी वर्मा के काव्य में ध्वनि बिम्बों की प्रधानता है। ध्वनि बिम्बों में काया का स्पन्दन, पषु–पक्षियों एवं भौतिक संसाधनों का आश्रय लेकर बिम्बों का सष्जन किया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति ध्वनि बिम्ब में "न जिसमें स्पंदन था न विकास/न जिसका आदि न उपसंहार/सृष्टि के आदि–आदि में मौन/अकेला सोता था वह कौन ?"[6]

महादेवी वर्मा ने पषु–पक्षियों के माध्यम से अपनी भाव–संवेदनाओं को व्यक्त की है। वे जब चातक को बादलों के लिए रोते देखती है, तो सजल हो उठती है– "नव मेघों को रोता था/जब चातक का बालक मन/ इन आंखों में करूणा के/घिर–घिर आते थे सावन।"[7] कवयित्री का काव्य दुःख, अश्रु, महारूदन का काव्य है । उन्होंने अश्रु के जल से काव्य को अभिसिचिंत किया है। देह के तार ढीले पड़ गए हैं, वाणी मूक हो चली है– "नहीं अब गाया जाता देव/थकी अंगुली है ढीले तार/विष्व वीणा में अपनी आज/मिला लो यह अस्फुट झंकार।[8]

स्पर्श बिम्ब–महादेवी वर्मा के काव्य में स्पर्ष बिम्ब का सूक्ष्म रूप में चित्रांकन है। कवयित्री का काव्य करूणा, दुःख, प्रणय वेदना, निराषा एवं अभावों से भरा है। "दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुंचा सकें, किन्तु हमारा एक बूंद आंसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।"[9] कवयित्री के जीवन में विरह व विशाद है वह विरह में मिलन की तीव्र आकांक्षा रखती है– "प्रतीक्षा में मतवाले नैन/उड़ेंगे जब सौरभ के साथ/ हृदय होगा नीरव आह्वान/ मिलोगे क्या तब हे अज्ञात।"[10] महादेवी वर्मा विरह की वेदना में पुनर्मिलन की आषा संजोए हुए हैं, किन्तु ऐसा लगता है कि कवयित्री ने विरह में मिलन की प्राप्ति कर

* सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग, शास. स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा

ली है। स्पर्ष बिम्ब से महादेवी वर्मा का काव्य संसार बिम्बित होता है – ''इस आषा से मैं उसमें/बैठी हूं निश्फल सपने घोल/कभी तुम्हारे सस्मित अधरों/को छू वे होंगे अनमोल।''[11] महादेवी वर्मा के काव्य में रूप बिम्ब, ध्वनि बिम्ब एवं स्पर्ष बिम्बों के साथ स्मष्त और कल्पित बिम्ब भी है। जब कल्पना स्मृति के आधार पर बिम्बों का निर्माण करती है तो वे स्मृत बिम्ब कहलाते हैं और जब सृजनात्मक कल्पना के द्वारा बिम्बों का निर्माण होता है, तब उन्हें कल्पित बिम्ब कहते हैं। अज्ञात प्रियतम की स्मृति मानस में अनेक स्वप्न या स्मृति उत्पन्न करती है। प्रिय के पूर्व मिलन की स्मृति बिम्ब का चित्रांकन ''किस सुधि–बसंत का सुमन तीर/कर गया मुग्ध मानस अधीर।''[12] महादेवी वर्मा की कल्पना सौन्दर्यवादी कल्पना है, कल्पना में भावों की क्रमबद्धता है। उसकी कल्पना स्वयं के जीवन परिवेष को छोड़कर क्रमषः विराटता और भव्यता की ओर अग्रसर होती गयी है। कल्पना अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष और अरूप को रूप प्रदान करती है–''दिन निषि को देती निषि दिन को/कनक–रजत के मधुप्याले हैं/अलि क्या प्रिय आने वाले हैं?''[13]

महादेवी वर्मा के काव्य में स्पष्टता, कलात्मकता एवं सूक्ष्मता है। काव्य बिम्बों का सृजन प्रेम, कल्पना तथा मानस के संयोग से हुआ है। उनके काव्य में कल्पना और अनुभूति से ध्वनि बिम्ब, रूप बिम्ब और स्पर्ष बिम्बों का जितना चित्रांकन है, उतना ही स्मृति और कल्पित बिम्बों का हुआ है। वे एक–एक पद को एक–एक चित्र के रूप में सजाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्त, महादेवी वर्मा : नया मूल्यांकन पृष्ठ 267 2- C. Hugh Holmans William Harman पृष्ठ 248 3. डॉ. नगेन्द्र : काव्य बिम्ब पृष्ठ 3 4. सुमित्रानंदन पंत : पल्लव की भूमिका 5. रष्मि पृष्ठ 78 6. रष्मि पृष्ठ 60 7. नीरजा पृष्ठ 35 8. नीहार पृष्ठ 10 9. यामा की भूमिका 10. नीहार पृष्ठ 41 11. रष्मि पृष्ठ 88 12. रष्मि पृष्ठ 93 13. नीरजा पृष्ठ 79